Valentine Day (Hindi)

वेलन्टाइन डे

(कुरआन व ह़दीस की रोशनी में)

पेशकश : मज्लिसे इफ़्ता (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَاءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

वेलन्टाइन डे (कुरआनो ह़दीस की रोशनी में)

येह रिसाला (वेलन्टाइन डे कुरआनो ह़दीस की रोशनी में)

मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा क़ादिरी अ़त्तारी مدظلہ العالی ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है, जिसे मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

वेलन्टाइन डे के ह़वाले से एक अहम फ़तवा

वेलन्टाइन डे

(क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में)

अज़ : मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा क़ादिरी अ़त्तारी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی

पेशकश
मजलिसे इफ़्ता (दा'वते इस्लामी)

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नाम रिसाला : **वेलन्टाइन डे** (क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में)

अज़ : **मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा क़ादिरी अ़त्तारी** مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی

पेशकश : **मजलिसे इफ़्ता** (दा'वते इस्लामी)

पहली बार : मुह़र्रमुल ह़राम 1437 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद ।

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C / 0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली - 580024. फ़ोन : 09343268414

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

E-mail : ilmia@dawateislami.net
www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

वेलन्टाइन डे

(कुरआनो ह़दीस की रोशनी में)

क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर-ए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि वेलन्टाइन डे (Valentine Day) जो अब राइज होता जा रहा है मुसल्मानों को इसे मनाना कैसा है ? इस दिन ना मह़रम लड़के और लड़कियां आपस में मह़ब्बत के तह़ाइफ़ (सुर्ख़ फूल, वेलन्टाइन कार्ड वग़ैरा) का आपस में तबा-दला करते हैं, मह़ब्बत के इक़रार और इस तअ़ल्लुक़ को बर क़रार रखने के वा'दे करते और क़समें खाते हैं तो क्या एक मुसल्मान को इस त़रह़ के तहवार मनाना ज़ैब देता है ? क्या इस्लाम इसे ऐसे तहवारों को मनाने की इजाज़त देता है ? अगर नहीं तो मुसल्मानों को मुआ़-शरे में राइज ऐसे तहवारों में क्या अन्दाज़ इख़्तियार करना चाहिये ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मुसल्लमा क़ाइदा है कि "من لم يعرف الشر فيومًا يقع فيه" या'नी जो बुराई को नहीं जानता एक न एक दिन बुराई में मुब्तला हो जाता है इस लिये बुराई से बचने के लिये बुराई को बुरा जानना

www.dawateislami.net

अव्वलन ज़रूरी है, फिर बुराई से ख़ुद को बचाने के लिये जो बुराई को जानना ज़रूरी है इस का मत़लब फ़क़त़ उस बुराई का नाम और उस अ़मल की शनाख़्त ही नहीं बल्कि उस की त़रफ़ ले जाने वाले अस्बाब जान कर उन से दूर रहना भी ज़रूरी है, यूंही जो बुराई में मुब्तला हो और उस से छुटकारा ह़ासिल करना चाहे उस के लिये भी बुराई तक ले जाने वाले अस्बाब जान कर ख़ुद से उन को दूर करना और उस बुराई की जड़ को ढूंड कर निकाल फेंकना ज़रूरी है कि जड़ को ख़त्म किये बिग़ैर बुराई के ख़ातिमे की कोशिश करना दीन व दानिश दोनों के ए'तिबार से ग़ैर मुफ़ीद साबित होती है, इस लिये अव्वलन फ़ित़री कमज़ोरियों और बुराई की त़रफ़ खींचने वाले अस्बाब की निशान देही की है इसे ज़रूर तवज्जोह से पढ़ लीजिये ! सिर्फ़ एक इसी मस्अले में नहीं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दगी भर बहुत से गुनाहों और ख़राबियों से बचने का सह़ीह़ त़ौर पर ज़ेह्न बनेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो बचना आसान भी हो जाएगा लिहाज़ा इस इब्तिदाई तम्हीदी मुक़द्दमे को ग़ैर अहम न समझें अपनी दुन्या व आख़िरत की भलाई के लिये इसे ज़रूर ज़ेह्न नशीन करें इस के बा'द क़ुरआन व ह़दीस की रोशनी में ख़ास त़ौर पर "**वेलन्टाइन डे**" मनाने का शर-ई हुक्म बयान किया जाएगा ।

"बद अ़-मली के अस्बाब और फ़ित़री कमज़ोरियां"

इन्सान चूंकि फ़ित़्रतन जल्द बाज़ और जिद्दत पसन्द होता है अगर अपनी अ़क़्ल से अह़कामे शरीअ़त को समझ कर उस के

www.dawateislami.net

दाएरे में ज़िन्दगी बसर न करे तो येह दो आ़दतें इसे क़दम क़दम पर बुराई में मुब्तला करती रहती हैं और इसे अपने किये का एह़सास भी नहीं होता और बुराई के भंवर में ऐसा फंसा रहता है कि इस से निकलना इस के लिये बेह़द दुश्वार हो जाता है फिर एक फ़ित़्री आ़दत चूंकि मिलजुल कर ज़िन्दगी बसर करने की भी इस में मौजूद है इस लिये दूसरों के साथ रहना भी इस के लिये ज़रूरी है और दुन्या में चूंकि मुसल्मानों के इ़लावा काफ़िर भी बसते हैं और बड़ी ता'दाद में बसते हैं और मुसल्मानों में भी नेक भी और ना फ़रमान भी दोनों त़रह़ के होते हैं इस लिये मुआ़-श-रती ज़िन्दगी में इस को बिगाड़ के अस्बाब ज़ियादा और सुधार के कम दस्त-याब होते हैं और मौजूदा ग्लोब्लाइज़ेशन के इस दौर में जब मीडिया की बड़ी कम्पनियों के मक़ासिद में बुराइयां, बद किरदारियां, बद अख़्लाक़ियां आ़म करना शामिल है और नफ़्सानी लज़्ज़ात व शहवात को दिखा दिखा कर लोगों का सुकून बरबाद करना और इन की त़बीअ़तों में हैजान बरपा किये रखना इन के अह्दाफ़ में से एक बड़ा हदफ़ है और इस पर भरपूर व मुनज़्ज़म त़रीक़े से बुराई की नश्रो इशाअ़त का काम बहुत तेज़ी से हो रहा है जिस से काफ़िरों के त़ौर त़रीक़े और ना फ़रमानों की नित नई ना फ़रमानियां मिनटों, सेकन्डों में सारी दुन्या में फैल जाती हैं इस लिये मुआ़-शरे में तबाह कुन अ-सरात ज़ियादा ज़ाहिर हो रहे हैं और येह बातें किसी से ढकी छुपी नहीं हैं।

www.dawateislami.net

फिर ख़राबियों और अख़्लाक़ी बुराइयों में मुब्तला होने वाले ज़ियादा तर दो त़रह़ के लोग होते हैं : **(1)** जो माली लिह़ाज़ से आसूदा ह़ाल, तअ़य्युश पसन्द, कर्रो फ़र, जाहो ह़श्मत के साथ रहने वाले हों। **(2)** जो अ़क़्ल के लिह़ाज़ से कमज़ोर और ग़ैर समझदार वाक़ेअ़ हों।

अ़क़्ल के लिह़ाज़ से कमज़ोर लोग इस लिये अख़्लाक़ी बुराइयों का ज़ियादा शिकार होते हैं कि अपने भले बुरे से कमा ह़क़्क़ुहू वाक़िफ़ नहीं होते इस लिये इन से अ़क़्ल के लिह़ाज़ से फ़ाइक़ त़बक़ा जब ज़ोरो शोर से अपना पैग़ाम इन में नश्र करता है तो उस से मु-तअस्सिर हो जाते हैं, चूंकि बुराई की दा'वत देने वाले ज़ियादा होते हैं इस लिये बुराई अ़वाम में बहुत जल्द वसीअ़ पैमाने पर फैलती है और बचाने वाले अगर्चे इन्तिहाई अ़क़्ल मन्द दीनदार हों चूंकि कम होते हैं इस लिये बुराई से बचने वालों की ता'दाद थोड़ी होती है।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यिद सुलैमान अशरफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी किताब **"अन्नूर"** में एक मक़ाम पर लिखते हैं :

"येह वाक़िआ़ और ह़क़ीक़त है कि अ़वाम न अपनी राय रखते हैं न इन की कोई आवाज़ है, मुल्क में ता'लीम याफ़्ता गुरौह जब किसी ख़याल की तरवीज या हमागीरी चाहता है तो वोह अपनी तक़रीर व तह़रीर से अ़वाम में उसी ख़याल को पैदा कर देता है वोह

www.dawateislami.net

अपने ख़याल के सूर को इस बुलन्द आहंगी से फूंकता है कि अ़वाम के ख़याल उसी के ख़याल का अ़क्स और अ़वाम की आवाज़ उसी की सदाए बाज़ गश्त होती है।''(1)

जब कि तअ़य्युश व जाह पसन्द त़बक़ा हुक्मरान हो या न हो इन के ख़राबियों बद अख़्लाक़ियों में मुब्तला होने की बड़ी वज्ह दुन्या त़-लबी और नफ़्सानी लज़्ज़ात व शहवात की असीरी होती है जो इन्हें राहे ह़क़ से दूर करते करते बहुत दूर ले जाती है।

कुरआने करीम में इर्शाद होता है :

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ وَاِذَاۤ اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا (2)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उस के खुशहालों (अमीरों) पर अह़काम भेजते हैं फिर वोह उस में बे हुक्मी करते हैं तो इस पर बात पूरी हो जाती है तो हम उसे तबाह कर के बरबाद कर देते हैं।

इस आयते मुबा-रका से मा'लूम होता है कि बिगाड़ व फ़साद और ना फ़रमानियों में मुब्तला होने की एक वज्ह बेह़द

1...... अन्नूर, स. 146

2...... پ۱۵،بنی اسرائیل:۱۵،۱۶

www.dawateislami.net

ख़ुशह़ाली और जाहो ह़श्मत के साथ हुक्मरानी भी होती है ऐसे लोगों के ना फ़रमानियों में मुब्तला हो जाने का ख़त़रा ज़ियादा रहता है और अ़ाम मुशा-हदे से भी इस का बख़ूबी पता चलता है।

अब एक त़रफ़ तो फ़ित़री अ़ादतों की येह सूरते ह़ाल है दूसरी त़रफ़ मुसल्मान चूंकि अ़ाम इन्सान नहीं होता बल्कि ब निस्बत काफ़िरों के ह़क़ीक़ी सच्ची इन्सानिय्यत का ताज इस के सर पर होता है इस लिये कि **अल्लाह तअ़ाला** के फ़ज़्लो करम से दौलते ईमान इसे नसीब होती है और मुसल्मान होने के नात़े इस का दीनो ईमान इसे जिद्दत पसन्दी के साथ ज़रूरी ह़द तक क़दामत पसन्द, जल्द बाज़ी की फ़ित़री अ़ादत के बा वुजूद तह़म्मुल पसन्द और अ़क़्ल से काम लेते हुए हुदूदे शरीअ़त में रहते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने वाला और लोगों से मिलजुल कर रहने की ना गुज़ीरियत के साथ बुराइयों से मुज्तनिब रहने और मु-तअस्सिर न होने का दर्स भी देता है, इस लिये मज़्हबी पाबन्दियों के साथ इस का ज़िन्दगी गुज़ारना ज़रूरी है।

ज़रूरी ह़द तक क़दामत पसन्द इस त़ौर पर होता है कि **अल्लाह** तअ़ाला के बारे में हमारा अ़क़ीदा येह है कि वोह क़दीम है या'नी हमेशा से है और हमेशा रहेगा और हमारे नबिय्ये मुकर्रम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाए हुए भी चौदह सो साल से ज़ियादा हो चुके इन पर रब का कलाम भी उसी मह़बूब ज़माने में नाज़िल हुवा था और आप ने अपनी इसी ज़ाहिरी ह़याते त़य्यिबा में इस की तफ़्ही़म व तशरीह़ अपनी अह़ादीस

www.dawateislami.net

की सूरत में उम्मत को अ़त़ा फ़रमाई थी तो जब येह सब कुछ भी पुराना है तो मुसल्मान का इस मा'ना में क़दामत पसन्द होना ज़रूरी हुवा, वरना वोह मुसल्मान कब रहेगा फिर कुरआनो ह़दीस की वाज़ेह़ नुसूस और अइम्मए मुज्तहिदीन के इज्माअ़ से साबित शुदा ज़रूरी अह़कामात बिग़ैर किसी ह़ीलो हुज्जत के मानना और उस पर अ़मल पैरा रहना यूंही अइम्मए अर-बआ़ में से जो किसी इमाम का मुक़ल्लिद है उस का अपने इमाम के क़ौल को ह़क़ तस्लीम करते हुए उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करना सच्चा मुसल्मान होने के लिये ज़रूरी है और येह सब बातें आज की नहीं सदियों पहले साबित व मुक़र्रर हो चुकी इन में से किसी बात पर अ़मल में कोताही और रद व इन्कार करने से नौबत फ़िस्क़ो फुजूर से ले कर कुफ़्र व गुमराही तक पहुंचती है इस लिये जदीद दुन्या में रहने वाला मुसल्मान भी अपने ईमान और दीनी ज़रूरी अह़काम के लिह़ाज़ से क़दामत पसन्द होता है और ऐसा होना भी चाहिये येह इस की मज़्हबी ज़िन्दगी के लिये रूह़ की ह़ैसिय्यत रखता है।

अल ग़रज़ ख़ुदाए ज़ुल जलाल और उस के भेजे हुए नबिय्ये बे मिसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन का इस ने कलिमा पढ़ा है उन के फ़रामीन में इसे दीनी मोह़तात़ ज़िन्दगी गुज़ारने का त़रीक़ए कार और इस की ह़दें चूंकि बयान कर दी गई हैं इसे शुतुरे बे मुहार की त़रह़ मन-मानियों के लिये आज़ाद नहीं छोड़ा गया लिहाज़ा मुसल्मान और काफ़िर के दरमियान येही बुन्यादी फ़र्क़ होता है कि मुसल्मान

www.dawateislami.net

साह़िबे ईमान और अह़कामे शरीअ़त का पाबन्द होता है काफ़िर इन दोनों बातों से मह़रूम और मादर पिदर आज़ाद रहता है।

मगर अफ़्सोस की बात येह है कि मुसल्मानों में से बहुत से कलिमा पढ़ने वाले दीन के दाएरे में रहना क़बूल करने के बा वुजूद माह़ोल के बिगाड़ और काफ़िरों की आज़ादियों से मु-तअस्सिर हो कर बे अ़-मली का शिकार हो जाते हैं, तहवारों के मुआ़-मले में ख़ुशी मनाने और इस के इज़्हार के त़रीक़ों को इख़्तियार करने में भी ऐसे ही मुसल्मान ग़-लत़ी का शिकार हो कर शरीअ़त की ह़द फलांगते हुए गुनाहों का इरतिकाब कर बैठते हैं, बुन्यादी वज्ह वोही फ़ित़री कमज़ोरियों को इस्लामी रुख़ से न समझना और उन कमज़ोरियों से बचने के लिये इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब और अ़क़ाइदो आ'माल से दूरी इख़्तियार किये रहना होती है।

इस लिये जिद्दत पसन्दी, जल्द बाज़ी, ना समझी, ग़ैर ज़रूरी मेलजोल और बुरी सोह़बत के अ-सरात से वोह बच नहीं पाते या इसी त़रह़ ख़ुश रहना पसन्द करते हैं और बचना नहीं चाहते।

यहां तक कि ग़ैर मुस्लिमों की त़रफ़ से जो भी चीज़ आए उन की दुन्यावी माद्दी तरक़्क़ियां देख देख कर ऐसे मरऊ़ब हो जाते हैं कि उन की हर चीज़ इन्हें अच्छी लगने लगती है, ग़ैर मुस्लिम ममालिक की स्टेम्प देख कर चीज़ें ख़रीदते हैं, उन्हीं के कल्चर के होटलों में खाना खाना, तक़रीबात में जाना पसन्द करते हैं, अपने घर और पूरा घराना, अपने मुकम्मल लिबास और किरदार व गुफ़्तार

www.dawateislami.net

तक से वोह अपने आप को उसी कल्चर का एक फ़र्द क़रार देने की कोशिश में लगे रहते हैं किसी ह़द तक काम्याब हो जाएं तो उन की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं रहती, येही वज्ह है कि जब कोई नई चीज़ वहां से आती है अगर्चे कैसी ही नापाक व ना जाइज़ क्यूं न हो कल्चर में शामिल होने की वज्ह से उस से दूर हो जाना उन के लिये दुश्वार होता है और दूर रहने का ख़याल भी आए तो फ़ौरन येह अन्देशा उन के दिलो दिमाग़ को अपनी गिरिफ़्त में ले लेता है कि हमारे स्टेटस के लोग फिर क्या कहेंगे ? क्या तुम्हें कल्चर के फ़ेशन के नए तहवारों का नहीं पता चलता ? साथ साथ चलो वरना हमारे साथ न चल सकोगे, पीछे रह जाओगे । इस त़रह़ की बातें सुन कर उन का ना समझ दिल और ज़िद्दी हो जाता है और उन्हें दीन के रास्ते से ना फ़रमानी की राह की त़रफ़ खींचता हुवा ले जाता है ।

इसी बिना पर इस्लामी दुश्मन क़ुव्वतें, कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला क़ौमें, मुसल्मानों की अक्सरिय्यत के मिज़ाज व नफ़्सियात को भांप कर वक़्तन फ़ वक़्तन तजरिबात करती रहती हैं कि इन्हें पता चलता रहे कि कितने फ़ीसद मज़्हबी लिहाज़ से पाबन्द रहते हैं और पाबन्द रहना पसन्द करते हैं और कितने फ़ीसद ऐसे हैं जिन्हों ने अपने ज़मीर का गला घोंट दिया और इन की हर एक बात पर **लब्बैक** कहने के लिये बे क़रार बैठे हैं और ज़ेहनी ए'तिबार से इन के शिकन्जे में मुकम्मल त़ौर पर जकड़े हुए हैं ।

जब अपने मुत़ीओ फ़रमां बरदार मुसल्मानों के टोले में

www.dawateislami.net

इज़ाफ़ा देखते हैं तो उन्हीं में से इस्लाम दुश्मनी के लिये मीर जा'फ़र व मीर सादिक़ जैसे अफ़राद को चुन चुन कर इफ़्तिराक़ व इन्तिशार और शुकूको शुबुहात पैदा करने के लिये और मुसल्लमा अह़कामाते शरइय्या को बे जा तावीलों के ज़रीए़ रद करने को हदफ़ दे कर काम में लगा दिया जाता है।

येह कुछ वाक़ेई सूरते ह़ाल अ़र्ज़ की है अभी ह़ाल ही में कुछ ऐसा ताज़ा ताज़ा नहीं हुवा बल्कि सल्त़नते इस्लामिया के ज़वाल से बल्कि इस से भी पहले से इस क़िस्म की साज़िशों और ह़माक़तों का मिन ह़ैसुल क़ौम मुसल्मान शिकार रहे हैं।

सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَہ अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब "बहारे शरीअ़त" में एक मक़ाम पर मुसल्मानों की इसी अब्तर ह़ालत की निशान देही करते हुए फ़रमाते हैं :

मुसल्मानों की जो अब्तर ह़ालत है इस का कहां तक रोना रोया जाए येह ह़ालत न होती तो येह दिन क्यूं देखने पड़ते और जब उन की क़ुव्वते मुन्फ़इला (असर क़बूल करने की क़ुव्वत) इतनी क़वी है और क़ुव्वते फ़ाइला (दुसरों पर असर अन्दाज़ होने की क़ुव्वत) ज़ाइल हो चुकी तो अब क्या उम्मीद हो सकती है कि येह मुसल्मान कभी तरक़्क़ी का ज़ीना तै़ करेंगे ग़ुलाम बन कर अब भी हैं और जब भी रहेंगे। وَالعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی (1)

चन्द ज़रूरी बातें तम्हीदन बयान करने से मक़्सूद येह है कि

1...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए नहुम, जिज़्ये का बयान, जि. 2, स. 451

www.dawateislami.net

वेलन्टाइन डे जैसा बेहूदा गुनाहों भरा दिन, मादर पिदर आज़ादी के साथ रंग रलियों के साथ मनाना, जो नौ जवान लड़के लड़कियों में मक़्बूल होता जा रहा है इस के पसे पर्दा भी इसी क़िस्म के अस्बाब मौजूद हैं जो ऊपर ज़िक्र किये गए या'नी फ़ित़री कमज़ोरियां, जिद्दत पसन्दी, जल्द बाज़ी, नफ़्सानी व शैत़ानी लज़्ज़ात की असीरी, दीन से दूरी, न ख़ुद पाबन्द रहना न अपनी औलाद की तरबिय्यत कर के इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब का इन्हें पाबन्द बनाना, न मिल्ली क़ौमी सत़्ह़ पर मुसल्मानों के हुक्मरानों का मुआ-शरे में ख़िलाफ़े इस्लाम रस्मो रवाज व तहवारों के ख़िलाफ़ सख़्त इक़्दामात उठाना येह वोह अस्बाब हैं जिन की वज्ह से मुसल्मानों में इस बेहूदा दिन के मनाने का आग़ाज़ हो चुका है बल्कि हुक्मरान त़बक़ा तो इस त़रह़ के ख़िलाफ़े इस्लाम न-ज़रिय्यात और खुल्लम खुल्ला गुनाहों की रोकथाम के इक़्दामात करने की बजाए इसे फ़रोग़ देने और इस क़िस्म के बुराई फैलाने वालों को तह़फ़्फ़ुज़ और खुल कर काम करने का मौक़अ़ देने में आगे आगे दिखाई देता है, अल ग़रज़ इन बयान कर्दा बुराई के अस्बाब में से हर सबब इस क़िस्म की बुराई का ख़न्जर मुसल्मानों के सीने में पैवस्त करने में अपना ज़ोर लगा रहा है।

वेलन्टाइन डे का पस मन्ज़र और इस दिन को मनाने का अन्दाज़

आमदम बर सरे मत़लब के तह़्त अब सुवाल चूंकि वेलन्टाइन डे के बारे में है कि इस लिये ख़ुसूसन सब से पहले वेलन्टाइन डे का

www.dawateislami.net

तारीख़ी पस मन्ज़र और इस दिन होने वाली ख़ुराफ़ात को बयान किया जाता है ताकि मुसल्मानों पर वाज़ेह़ हो कि इस गुनाहों से भरपूर दिन की ह़क़ीक़त क्या है चुनान्चे कहा जाता है कि एक पादरी जिस का नाम वेलन्टाइन था तीसरी सदी ई-सवी में रूमी बादशाह क्लाडेस सानी के ज़ेरे हुकूमत रहता था, किसी ना फ़रमानी की बिना पर बादशाह ने पादरी को जेल में डाल दिया, पादरी और जेलर की लड़की के माबैन इ़श्क़ हो गया ह़त्ता कि लड़की ने इस इ़श्क़ में अपना मज़हब छोड़ कर पादरी का मज़हब नसरानिय्यत क़बूल कर लिया, अब लड़की रोज़ाना एक सुर्ख़ गुलाब ले कर पादरी से मिलने आती थी, बादशाह को जब इन बातों का इ़ल्म हुवा तो उस ने पादरी को फांसी देने का हुक्म सादिर कर दिया, जब पादरी को इस बात का इ़ल्म हुवा कि बादशाह ने इस की फांसी का हुक्म दे दिया है तो उस ने अपने आख़िरी लम्ह़ात अपनी मा'शूक़ा के साथ गुज़ारने का इरादा किया और इस के लिये एक कार्ड उस ने अपनी मा'शूक़ा के नाम भेजा जिस पर येह तह़रीर था "**मुख़्लिस वेलन्टाइन की त़रफ़ से**" बिल आख़िर 14 फ़रवरी को उस पादरी को फांसी दे दी गई इस के बा'द से हर 14 फ़रवरी को येह मह़ब्बत का दिन उस पादरी के नाम वेलन्टाइन डे के त़ौर पर मनाया जाता है।

जब कि इस तहवार को मनाने का अन्दाज़ येह होता है कि नौ जवान लड़कों और लड़कियों के बे पर्दगी व बे ह़याई के साथ मेल मिलाप, तोह़फ़े तह़ाइफ़ के लैन दैन से ले कर फ़ह़्ह़ाशी व उ़र्यानी

www.dawateislami.net

की हर क़िस्म का मुज़ा-हरा खुले अ़ाम या चोरी छुपे जिस का जितना बस चलता है अ़ाम देखा सुना जाता है एक रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ पाकिस्तान में फ़ेमिली प्लानिंग की अदवियात अ़ाम दिनों के मुक़ाबले वेलन्टाइन डे में कई गुना ज़ियादा बिकती हैं और ख़रीदने वालों में अक्सरिय्यत नौ जवान लड़के और लड़कियों की होती है, गिफ़्ट शॉप्स और फूलों की दुकान पर रश में इज़ाफ़ा हो जाता है और इन अश्या को ख़रीदने वाले भी नौ जवान लड़के लड़कियां होती हैं।

मशरिक़ी अक़्दार के ह़ामिल ममालिक में खुली छूट न होने की वज्ह से नौ जवान जोड़ों को मह़फ़ूज़ मक़ाम की तलाश होती है। इसी मक़्सद के लिये इस दिन होटल्ज़ की बुकिंग अ़ाम दिनों के मुक़ाबले में बढ़ जाती है और बुकिंग कराने वाले रंग रलियां मनाने वाले नौ जवान लड़के लड़कियां होती हैं।

शराब का बे तह़ाशा कारोबार होता है साह़िले समुन्दर पर बे पर्दगी और बे ह़याई का एक नया समुन्दर दिखाई देता है।

मग़रिबी ममालिक में जहां ग़ैर मुस्लिम मादर पिदर आज़ादी के साथ रहते हैं और फ़ह़्ह़ाशी व उ़र्यानी और जिन्सी बे राह-रवी को वहां हर त़रह़ की क़ानूनी छूट ह़ासिल है इस दिन धमा चोकड़ी से बा'ज़ अवक़ात वोह भी परेशान हो जाते हैं और इस के ख़िलाफ़ बा'ज़ अवक़ात कहीं कहीं से दबी दबी सदाए एह़तिजाज बुलन्द होती रहती है जैसा कि इंग्लेन्ड में इस की मुख़ा-लफ़त में एह़तिजाज किया गया और एह़तिजाज की बुन्यादी वज्ह येह बताई गई कि इस

www.dawateislami.net

दिन की बदौलत इंग्लेन्ड के एक प्रायमरी स्कूल में **10** साल की **39** बच्चियां ह़ामिला हुईं। ग़ौर कीजिये येह तो प्रायमरी स्कूल की दस सालह बच्चियों के साथ सफ़ाकिय्यत की ख़बर है वहां के नौ जवान लड़के लड़कियों के ना जाइज़ तअ़ल्लुक़ात और इस के नतीजे में ह़म्ल ठहरने और इस्क़ाते़ ह़म्ल के वाक़िआ़त की ता'दाद फिर कितनी होगी इस का अन्दाज़ा बख़ूबी लगाया जा सकता है।

इन्तिहाई दुख और अफ़्सोस की बात येह है कि इस दिन को काफ़िरों की त़रह़ बे ह़याई के साथ मनाने वाले बहुत से मुसल्मान भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़त़ा किये हुए पाकीज़ा अह़कामात को पसे पुश्त डालते हुए खुल्लम खुल्ला गुनाहों का इरतिकाब कर के न सिर्फ़ येह कि अपने नामए आ'माल की सियाही में इज़ाफ़ा करते हैं बल्कि मुस्लिम मुआ़-शरे की पाकीज़गी को भी इन बेहूदगियों से नापाक व आलूदा करते हैं।

बद निगाही, बे पर्दगी, फ़ह़्ह़ाशी ड़ुर्यानी, अज्नबी लड़के लड़कियों का मेल मिलाप, हंसी मज़ाक़, इस ना जाइज़ तअ़ल्लुक़ को मज़बूत़ रखने के लिये तह़ाइफ़ का तबा-दला और आगे ज़िना और दवाइये ज़िना तक की नौबतें येह सब वोह बातें है जो इस रोज़े इस्यां ज़ोरो शोर से जारी रहती हैं और इन सब शैत़ानी कामों के ना जाइज़ व ह़राम होने में किसी मुसल्मान को ज़र्रा भर भी शुबा नहीं हो सकता कु़रआने करीम की आयाते बय्यिनात और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वाज़ेह़ इर्शादात से इन उमूर की हु़रमत व मज़म्मत साबित है।

www.dawateislami.net

मगर चूंकि इस क़िस्म के सुवाल से मक़्सूद येह होता है कि मुसल्मानों को दीनी नुक्त़ए नज़र से समझाया जाए और इस दिन की ख़ुराफ़ात के साथ इस को मनाने की शनाअ़त व बुराई से इन्हें आगाह कर के इन के दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा और शर्मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पैदा की जाए ताकि वोह इन ना-पाकियों से ताइब हो कर अपने अफ़्कार व किरदार की इस्लाह़ में मश्ग़ूल हो कर बरोज़े क़ियामत सुर्ख़-रू हों, लिहाज़ा तरग़ीब व तरहीब के लिये चन्द बातें दीन से मह़ब्बत करने वाले अपने इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में अ़र्ज़ करता हूं, ख़ुद भी पढ़ें और इस अहम फ़तवे को जो मज़्मून की शक्ल में है आ़म करें ताकि आ़म्मतुल मुस्लिमीन के दीनो दुन्या का भला हो।

अब ज़रा अपनी पाकीज़ा शरीअ़त के अह़कामात मुला-ह़ज़ा कीजिये किस त़रह़ बद निगाही, बे ह़याई, बे पर्दगी और हर क़िस्म की फ़ह़्ह़ाशी व उ़र्यानी की मज़म्मत कुरआने करीम की आयात और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्शादात में बयान हुई है तवज्जोह के साथ पढ़ना सुनना और समझना चूंकि मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है इस लिये इतनी हिम्मत ज़रूर कीजिये और आयात व अह़ादीस को अपने दिल में दाख़िल होने का मौक़अ़ दीजिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो तौबा की तौफ़ीक़ के साथ साथ परहेज़ गारी की दौलत और इत्तिबाए़ सुन्नत की तौफ़ीक़ भी मिल जाएगी।

www.dawateislami.net

शर्मो ह़या का दर्स और बे ह़याई की मज़म्मत आयाते क़ुरआनिया से

(1)...... अल्लाह तआला फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ یَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ یَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا یَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ یَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ یَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ ...الاٰیۃ (1)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है बेशक **अल्लाह** को उन के कामों की ख़बर है और मुसल्मान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की ह़िफ़ाज़त करें।

सूरए नूर की इसी इक्तीसवीं आयत में येह भी इर्शाद हुवा कि

وَ لَا یَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِیُعْلَمَ مَا یُخْفِیْنَ مِنْ زِیْنَتِهِنَّ (2)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार।

(2)...... सू-रतुल अह़ज़ाब में इर्शाद हुवा :

یٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ नबी की बीबियो तुम और औ़रतों

1 ......پ۱۸،النور:۳۰،۳۱.

2 ......پ۱۸،النور:۳۱.

www.dawateislami.net

النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَیۡتُنَّ فَلَا تَخۡضَعۡنَ بِالۡقَوۡلِ فَیَطۡمَعَ الَّذِیۡ فِیۡ قَلۡبِہٖ مَرَضٌ وَّ قُلۡنَ قَوۡلًا مَّعۡرُوۡفًا ﴿ۚ۳۲﴾ وَ قَرۡنَ فِیۡ بُیُوۡتِکُنَّ وَ لَا تَبَرَّجۡنَ تَبَرُّجَ الۡجَاہِلِیَّۃِ الۡاُوۡلٰی وَ اَقِمۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ اٰتِیۡنَ الزَّکٰوۃَ وَ اَطِعۡنَ اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ (1)

की त़रह़ नहीं हो अगर **अल्लाह** से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे। हां अच्छी बात कहो और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी। और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो।

(3)...... **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान भी मुला-ह़ज़ा कीजिये :

یٰۤاَیُّہَا النَّبِیُّ قُلۡ لِّاَزۡوَاجِکَ وَ بَنٰتِکَ وَ نِسَآءِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ یُدۡنِیۡنَ عَلَیۡہِنَّ مِنۡ جَلَابِیۡبِہِنَّ ؕ ذٰلِکَ اَدۡنٰۤی اَنۡ یُّعۡرَفۡنَ فَلَا یُؤۡذَیۡنَ ؕ وَ کَانَ اللّٰہُ غَفُوۡرًا رَّحِیۡمًا (2)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ नबी अपनी बीबियों और साह़िब ज़ादियों और मुसल्मानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक ह़िस्सा अपने मुंह पर डाले रहें येह इस से नज़्दीक-तर है कि इन की पहचान हो तो सताई न जाएं। और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

1 ......پ ۲۲، الاحزاب: ۳۲، ۳۳.

2 ......پ ۲۲، الاحزاب: ۵۹.

www.dawateislami.net

(4)...... इस फ़रमान को भी तवज्जोह से पढ़ लीजिये :

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا (1)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और किसी मुसल्मान मर्द न मुसल्मान औ़रत को पहुंचता है कि जब **अल्लाह** व रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़-मले का कुछ इख़्तियार रहे और जो हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका ।

मज़्कूरा आयाते कुरआनिया में **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** ने मुअमिनीन मर्दों और औ़रतों को निगाहें नीची रखने, अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करने का हुक्म दिया और पर्दे की अहम्मिय्यत किस क़दर है इस का अन्दाज़ा इस बात से लगा लीजिये कि औ़रतों को जाहिलिय्यते ऊला की बे पर्दगी से मन्अ़ किया गया यहां तक कि ज़ेवर की आवाज़ भी ग़ैर मर्द न सुने, इस का लिह़ाज़ रखने का फ़रमाया गया और आख़िरी आयत जो ज़िक्र की गई उस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले के बा'द किसी मुसल्मान मर्द व औ़रत के लिये इख़्तियार बाक़ी नहीं रह जाता इस का वाज़ेह़ ए'लान फ़रमा दिया गया तो क्या मुसल्मानों को इन अह़कामात के आगे सरे तस्लीम ख़म नहीं करना चाहिये लेकिन

(1)......پ۲۲،الاحزاب:۳۶.

www.dawateislami.net

अफ़्सोस के साथ कहना पड़ता है कि बहुत से मुसल्मान मर्द व औ़रतें वेलन्टाइन डे में इन अह़कामात की ए'लानिया खुल्लम खुल्ला काफ़िरों की तक़्लीद में ख़िलाफ़ वर्ज़ियां करते हैं **अल्लाह** तआ़ला अ़क़्ल दे, समझ दे, अह़कामे शरीअ़त की इत्तिबाअ़ में ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ दे ।

शर्मो ह़या का दर्स और बे ह़याई की मज़म्मत अह़ादीसे मुबा-रका से

(1)...... मिश्कातुल मसाबीह़ में है : ”وعن الحسن مرسلًا قال: بلغنی أنّ رسول صلی اللہ علیہ و سلم قال: لعن اللّٰہ الناظر والمنظور الیہ رواہ البیھقی فی شعب الایمان.“ ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मुर-सलन मरवी है, कहते हैं : मुझे येह ख़बर पहुंची है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि देखने वाले पर और उस पर जिस की त़रफ़ नज़र की गई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ला'नत फ़रमाता है (या'नी देखने वाला जब बिला उ़ज़्र क़स्दन देखे और दूसरा अपने को बिला उ़ज़्र क़स्दन दिखाए ।) ।[1]

(2)...... सु-नने अबू दावूद में है : ”والیدان تزنیان فزناھما البطش والرجلان تزنیان فزناھما المشی والفم یزنی فزناہ القبل.“ और हाथ ज़िना करते हैं और इन का ज़िना (ह़राम को) पकड़ना है और पाउं ज़िना करते हैं और इन का ज़िना (ह़राम की त़रफ़) चलना है और मुंह (भी) ज़िना करता है और इस का ज़िना बोसा देना है ।[2]

---

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب النکاح، باب النظر الی المخطوبۃ... الخ، الفصل الثالث، ۱/۵۷٤، الحدیث: ۳۱۲۵.

2 ......ابو داود، کتاب النکاح، باب ما یؤمر بہ من غضّ البصر، ۲/۳۵۹، الحدیث: ۲۱۵۳.

www.dawateislami.net

(3)...... सह़ीह़ मुस्लिम में है : "عن أبی هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم صنفان من اهل النار لم أرهما، قوم معهم سياط كأذناب البقر يضربون بها الناس ونساء كاسيات عاريات مميلات مائلات رء وسهنّ كأسنمة البخت المائلة لا يدخلن الجنة ولا يجدن ريحها وإن ريحها ليوجد من مسيرة كذا وكذا."

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दोज़ख़ियों की दो जमाअ़तें ऐसी होंगी जिन्हें मैं ने (अपने इस अ़हदे मुबारक में) नहीं देखा (या'नी आयिन्दा पैदा होने वाली हैं, उन में) एक वोह क़ौम जिन के साथ गाय की दुम की त़रह़ कोड़े होंगे जिन से लोगों को मारेंगे और (दूसरी क़िस्म) उन औ़रतों की है जो पहन कर नंगी होंगी दूसरों को (अपनी त़रफ़) माइल करने वाली और माइल होने वाली होंगी, उन के सर बुख़्ती ऊंटों की एक त़रफ़ झुकी हुई कोहानों की त़रह़ होंगे वोह जन्नत में दाख़िल न होंगी और न उस की ख़ुश्बू पाएंगी ह़ालां कि उस की ख़ुश्बू इतनी इतनी दूर से पाई जाएगी ।(1)

(4)...... नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "لان يعطن فی رأس احدكم بمخيط من حديد خير له من ان يمسّ امرأة لا تحلّ له." तुम में से किसी के सर में लोहे की सूई घोंप दी जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि वोह ऐसी औ़रत को छूए जो उस के लिये ह़लाल नहीं ।(2)

---

(1) ......مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب النساء الكاسيات العاريات...الخ، ص١١٧٧، الحديث: ١٢٥ (٢١٢٨).

(2) ......معجم كبير، ابو العلاء يزيد بن عبد الله... الخ، ٢١١/٢٠، الحديث: ٤٨٦.

www.dawateislami.net

(5)...... नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

"ایاکم والخلوۃ بالنساء والذی نفسی بیدہ ما خلا رجل بامرأۃ الّا دخل الشیطان بینھما ولان یزحم رجلًا خنزیر متلطخ بطین اوحماۃ- ای طین اسود منتن- خیر لہ من ان یزحم منکبہ امرأۃ لا تحلّ لہ."

औ़रतों के साथ तन्हाई इख़्तियार करने से बचो ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! कोई शख़्स किसी औ़रत के साथ तन्हाई इख़्तियार नहीं करता मगर उन के दरमियान शैत़ान दाख़िल हो जाता है और मिट्टी या सियाह बदबूदार कीचड़ में लिथड़ा हुवा ख़िन्ज़ीर किसी शख़्स से टकरा जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि उस के कन्धे ऐसी औ़रत से टकराएं जो उस के लिये ह़लाल नहीं ।(1)

शैख़ुल इस्लाम शिहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ الرَّحْمَه अपनी किताब **''अज़्ज़वाजिर अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर''** में इर्शाद फ़रमाते हैं, इस का तरजमा है : ''बा'ज़ों ने अपने हाथ को किसी औ़रत के हाथ पर रखा तो उन दोनों के हाथ चिमट गए और लोग उन्हें जुदा करने में नाकाम हो गए यहां तक कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने उन की रहनुमाई फ़रमाई कि वोह अ़ह्द करें कि ऐसी ना फ़रमानी का इरतिकाब कभी नहीं करेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़गिड़ा कर सिदक़े दिल से तौबा करें पस उन्हों ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें छुटकारा अ़त़ा

(1)......الزواجر عن اقتراف الکبائر، الباب الثانی فی الکبائر الظاھرۃ، کتاب النکاح، ٦/٢.

www.dawateislami.net

फ़रमाया । और असाफ़ और नाइला का क़िस्सा मशहूर है कि उन्हों ने ज़िना किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों को चेहरा मस्ख़ कर के पथ्थर बना दिया ।"

तुम येह देख कर धोका न खाओ कि कोई शख़्स ना फ़रमानी का मुर-तकिब होने के बा वुजूद अभी तक सह़ीह़ो सालिम है और उसे जल्दी सज़ा नहीं मिलती अ़क़्ल मन्द के लिये मुनासिब नहीं कि वोह अपने नफ़्स पर ग़ुरूर करे, अपने नफ़्स पर ग़ुरूर करने वाला अच्छा नहीं अगर्चे वोह सलामत रहे क्यूं कि ऐन मुम्किन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये सज़ा को जल्दी मुक़र्रर कर दे जब कि दूसरों के लिये न करे, क्यूं कि उसे इस से रोकने वाला कोई नहीं कि कभी बहुत शनीअ़ व क़बीह़ चीज़ के साथ जल्दी सज़ा हो जाती है जैसे दिल का मस्ख़ होना, बारगाहे ह़क़ में ह़ाज़िरी से दूरी, हिदायत के बा'द गुमराही और बारगाहे ख़ुदा वन्दी की त़रफ़ मु-तवज्जेह होने के बा'द ए'राज़ करना ।(1)

गाने बाजे और मूसीक़ी की मज़म्मत कुरआनो ह़दीस की रोशनी में

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

(1)......الزواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الثانى فى الكبائر الظاهرة، الكبيرة الثالثة و الخمسون بعد المائة، ١/٤٤٥.

www.dawateislami.net

وَ مِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡتَرِیۡ لَہۡوَ الۡحَدِیۡثِ لِیُضِلَّ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ ٭ۖ وَّ یَتَّخِذَہَا ہُزُوًا ؕ اُولٰٓئِکَ لَہُمۡ عَذَابٌ مُّہِیۡنٌ (1)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं कि **अल्लाह** की राह से बहका दें बे समझे और इसे हंसी बना लें उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

इस आयत में "لَهْوَالْحَدِيْثِ" से मु-तअ़ल्लिक़ मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि इस से मुराद गाना बजाना है।

बुख़ारी शरीफ़ में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वाज़ेह़ फ़रमान मौजूद है : "ليكونن من امّتى اقوام يستحلّون الحرّ والحرير و الخمر و المعازف" **तरजमा :** ज़रूर मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो ज़िना, रेशम, शराब और बाजों को ह़लाल ठहराएंगे।(2)

मशहूर सह़ाबी ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : गाने बाजे की आवाज़ दिल में इस त़रह़ निफ़ाक़ पैदा करती है जैसे पानी नबातात को उगाता है।

अल ह़ासिल : मज़्कूरा आयाते करीमा और अह़ादीसे मुबा-रका को बग़ौर मुला-ह़ज़ा करें कि ह़राम को देखने वाला और जो अपना जिस्म ग़ैर को दिखाए दोनों पर ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है और दोनों ही रह़मते इलाही से दूर हैं फिर ज़िना सिर्फ़ शर्मगाह का नहीं बल्कि हाथ का ज़िना ह़राम को पकड़ना, आंख का ज़िना ह़राम को देखना, पाउं का ज़िना ह़राम की त़रफ़ चलना, मुंह का ज़िना ह़राम बोसा देना और वेलन्टाइन डे में उ़मूमन येह सारे

1......پ ٢١، لقمٰن: ٦.

2......بخارى، كتاب الاشربة، باب ما جاء فيمن يستحلّ الخمر... الخ، ٣/٥٨٣، الحديث: ٥٥٩٠.

www.dawateislami.net

ह़राम काम और ज़िना की येह तमाम अक़्साम पाई जाती हैं, ह़दीसे मुबारक में ग़ैर औ़रत के साथ तन्हा ख़ल्वत इख़्तियार करने की किस क़दर सख़्ती से मुमा-न-अ़त की गई और मिसाल से इस की बुराई बयान फ़रमाई कि बदबूदार कीचड़ से लिथड़ा हुवा ख़िन्ज़ीर किसी शख़्स से टकराए येह ग़ैर औ़रत से कन्धा मिलाने से बेहतर है जब कि इस दिन को मनाने वाले इन उमूर का इरतिकाब बड़ी बेबाकी के साथ करते हैं आपस में हाथ में हाथ डाले बे ह़याई व फ़ह़्ह़ाशी का मुज़ा-हरा करते नज़र आते हैं इस वेलन्टाइन डे में ना जाइज़ ख़ुशी के ज़राएअ़ अपना कर रंग रलियां मनाने वालों के लिये असाफ़ व नाइला के अ़ज़ाब में बड़ी इ़ब्रत का सामान है कहीं ऐसा न हो कि इस दिन बे ह़याई व फ़ह़्ह़ाशी का मुज़ा-हरा करने की वज्ह से किसी अ़ज़ाब का शिकार हो जाएं उन्हें डरना चाहिये और अगर दुन्या में अ़ज़ाब नाज़िल न भी हो तब भी इस गुनाहे अ़ज़ीम की आख़िरत में जो सज़ा होगी इस से तो हर मुसल्मान को डरना ही चाहिये और दुन्या में पकड़ व गिरिफ़्त न होने की वज्ह से हरगिज़ बे ख़ौफ़ नहीं होना चाहिये।

मुसल्मान की तो कुरआने करीम में येह शान बयान हुई है कि वोह रह़मान عَزَّوَجَلَّ से बिन देखे डरते हैं लिहाज़ा ख़ुदा के ख़ौफ़ से लरज़ कर उस की रह़मत के दामन से लिपट कर सच्ची तौबा कर लीजिये वोह ग़फ़ूर है रह़ीम है तौबा करने वालों की न सिर्फ़ तौबा क़बूल फ़रमाता है बल्कि उन्हें अपना मह़बूब बना लेता है। इस दिन फ़िल्में डिरामे गाने बाजे और मुख़्तलिफ़ बे ह़याई से लबरेज़ शो देखने वाले भी तौबा कर लें कि येह सब सख़्त ना जाइज़ व ह़राम अफ़्आ़ल हैं।

www.dawateislami.net

ना जाइज़ महब्बत में दिये जाने वाले तहाइफ़ का हुक्म

वेलन्टाइन वाले दिन अजनबी मर्द व औ़रत के माबैन जो ना जाइज़ मह़ब्बत का तअ़ल्लुक़ क़ाइम होता है और आपस में जो तह़ाइफ़ का तबा-दला होता है फ़ु-क़हाए किराम फ़रमाते हैं कि येह रिश्वत के हुक्म में दाख़िल है इस लिये ना जाइज़ व ह़राम है ऐसे गिफ़्ट लेना और देना दोनों ही ना जाइज़ व ह़राम हैं अगर किसी ने येह तह़ाइफ़ लिये हैं तो उस पर तौबा के साथ साथ येह तह़ाइफ़ वापस करना भी लाज़िम है।

चुनान्चे बह़्रुर्राइक़ में है : "ما يدفعه المتعاشقان رشوة يجب ردّها ولا تملك." आ़शिक़ व मा'शूक़ (ना जाइज़ महब्बत में गिरिफ़्तार) आपस में एक दूसरे को जो (तह़ाइफ़) देते हैं वोह रिश्वत है उन का वापस करना वाजिब है और वोह मिल्किय्यत में दाख़िल नहीं होते।(1)

शराब नोशी की मज़म्मत से मु-तअ़ल्लिक़ आयाते कुरआनिया व अह़ादीसे मुबा-रका

कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (2)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शराब और जुवा और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ।

---

1 ......بحر الرائق، كتاب القضاء، ٦/٤٤١. 2 ......پ٧،المائدة:٩٠.

www.dawateislami.net

अह़ादीसे मुबा-रका में भी शराब पीने पर मु-तअ़द्दद अ़ज़ाबों की वईदें वारिद हुई हैं चन्द का तरजमा मुला-ह़ज़ा हो :

ह़दीस नम्बर 1 : सह़ीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर नशे वाली चीज़ ह़राम है बेशक **अल्लाह तआ़ला** ने अ़ह्द किया है कि जो शख़्स नशा पियेगा उसे "त़ी-नतुल ख़बाल" से पिलाएगा । लोगों ने अ़र्ज़ की : "त़ी-नतुल ख़बाल" क्या चीज़ है ? फ़रमाया कि : जहन्नमियों का पसीना या उन का उ़सारह (निचोड़) ।(1)

ह़दीस नम्बर 2 : तिरमिज़ी ने **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर और नसाई व इब्ने माजह व दारिमी ने **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत की, कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स शराब पियेगा उस की चालीस रोज़ की नमाज़ क़बूल न होगी फिर अगर तौबा करे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा फिर अगर पिये तो चालीस रोज़ की नमाज़ क़बूल न होगी इस के बा'द तौबा करे तो क़बूल है फिर अगर पिये तो चालीस रोज़ की नमाज़ क़बूल न होगी इस के बा'द तौबा करे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) क़बूल फ़रमाएगा फिर अगर चौथी मर्तबा पिये तो चालीस रोज़ की नमाज़ क़बूल न होगी अब अगर तौबा करे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस की तौबा क़बूल नहीं फ़रमाएगा और नहरे ख़बाल से उसे पिलाएगा ।(2)

ह़दीस नम्बर 3 : दारिमी ने **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से

---

1 ......مسلم ، کتاب الاشربة ، باب بیان انّ کلّ مسکر خمراً ... الخ ، ص ١١٠٩ ، الحدیث:٧٢(٢٠٠٢).

2 ......ترمذی، کتاب الاشربة،باب ماجاء فی شارب الخمر،٣/٣٤٢،الحدیث:١٨٦٩.

www.dawateislami.net

रिवायत की, कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाला और जुवा खेलने वाला और एह़सान जताने वाला और शराब की मुदा-वमत करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।(1)

ह़दीस नम्बर 4 : इमाम अह़मद ने अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत की, कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : **अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है : क़सम है मेरी इ़ज़्ज़त की ! मेरा जो बन्दा शराब का एक घूंट भी पियेगा मैं उस को इतनी ही पीप पिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से उसे छोड़ेगा मैं उस को ह़ौज़े क़ुद्स से पिलाऊंगा।(2) (ब ह़वाला बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 385, 386)

याद रहे ! शराब पीने का जुर्म साबित होने की सूरत में इस की सज़ा बत़ौरे ह़द **80** कोड़े हैं जो कि तमाम शराइत़ पाई जाने की सूरत में मुजरिम को मारे जाते हैं जिस की तफ़्सील कुतुबे फ़िक़्ह में मुला-ह़ज़ा की जा सकती है।(3)

ज़िना व दवा-इये ज़िना की मज़म्मत में आयाते क़ुरआनिया व अह़ादीसे त़य्यिबा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

(1)......مشکاۃ المصابیح، کتاب الحدود، باب بیان الخمر...الخ، ۲/۳۳۰، الحدیث: ۳۶۵۳.

(2)......مسند امام احمد، حدیث ابی امامۃ الباھلی، ۸/۲۸۶، الحدیث: ۲۲۲۸۱.

(3)...... शराब नोशी की मज़म्मत से मु-तअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "बहारे शरीअ़त, जिल्द 2 ह़िस्सा 9" (मत़बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤی اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا (1)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे ह़याई है और बहुत ही बुरी राह।

एक और मक़ाम पर इर्शादे ख़ुदा वन्दी होता है :

وَ الَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَ لَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لَا يَزْنُوْنَ ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۙ﴿۶۸﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ يَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا (2)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा।

ग़ैर शादी शुदा अफ़राद के लिये ज़िना की सज़ा के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اَلزَّانِيَةُ وَ الزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّ لَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَ لْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (3)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े लगाओ और तुम्हें उन पर तर्स न आए **अल्लाह** के दीन में अगर तुम ईमान लाते हो **अल्लाह** और पिछले दिन पर और चाहिये कि उन की सज़ा के वक़्त मुसल्मानों का एक गुरौह ह़ाज़िर हो।

1......پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۲.
2......پ ۱۹، فرقان: ۶۸، ۶۹.
3......پ ۱۸، النور: ۲.

www.dawateislami.net

याद रहे ! जब कि शादी शुदा अफ़्राद से इस जुर्मे क़बीह़ के तह़क़्क़ुक़ की सूरत में जब कि हर त़रह़ से यक़ीन व सुबूत हो और ज़रूरी शराइत़ पाई जाएं तो इस की सज़ा बत़ौरे ह़द रज्म (संगसार करना) है जिस की तफ़्सील कुतुबे अह़ादीस व फ़िक़्ह में मुला-ह़ज़ा की जा सकती है।

अबू दावूद की ह़दीसे मुबा-रका में है : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اذا زنی الرجل خرج منه الایمان کان علیه کالظلة فاذا انقلع رجع الیه الایمان" जब बन्दा ज़िना करता है तो उस से ईमान निकल जाता है और उस पर बादल की त़रह़ रहता है फिर जब वोह इस ह़-र-कत को छोड़ता है तो उस का ईमान लौट आता है।(1)

मुस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल में है : "ثلاثة لا یکلمهم الله یوم القیامة ولا ینظر الیهم و لا یزکیهم و لهم عذاب الیم: شیخ زان وملك کذاب وعائل مستکبر" **तरजमा :** तीन क़िस्म के लोग वोह हैं जिन से क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला कलाम नहीं फ़रमाएगा, न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाएगा और न उन को पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। बूढ़ा ज़ानी, झूटा बादशाह और इ़याल दार तकब्बुर करने वाला।(2)

इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ज़िनाकार लोगों को शर्मगाहों के साथ जहन्नम में लटकाया जाएगा और लोहे के गुर्ज़ों के साथ मारा जाएगा। जब वोह इस सज़ा

(1) ......ابو داؤد ، کتاب السنّة ، باب الدلیل علی زیادة الایمان و نقصانه ، ٤ / ٢٩٣، الحدیث: ٤٦٩٠ .

(2) ......مسند امام احمد، مسند ابی هریرة رضی الله عنه، ٣/٥٢٥، الحدیث: ١٠٢٣١ .

www.dawateislami.net

से बचने के लिये मदद त़लब करेगा तो फ़िरिश्ते आवाज़ देंगे कि येह आवाज़ उस वक़्त कहां थी जब तू हंसता था, ख़ुश होता और अकड़ता था। न **अल्लाह** तआ़ला को देखता और न उस की ह़या करता था।(1)

शराबो कबाब, ज़िना व दवाइये ज़िना की मज़म्मत का बयान पढ़ कर ज़ेह्न नशीन करें और ख़ुद इस त़रह़ की बुराइयों में से किसी बुराई में मुब्तला हैं तो फ़ौरन तौबा कर लीजिये और दूसरों को भी इस की रोशनी में तौबा की तल्क़ीन कर के सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने पर आमादा कीजिये।

मादर पिदर आज़ादी की नुहूसत और बिगड़ती सूरते ह़ाल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने पाकीज़ा मज़हब इस्लाम की निखरी सुथरी ता'लीमात आप ने मुला-ह़ज़ा की, कि इस्लाम एक मुसल्मान को और पूरे मुस्लिम मुआ़-शरे को किस क़दर पाको साफ़ और शर्मो ह़या से भरपूर देखना चाहता है इस के बर अ़क्स मग़रिबी मुआ़-शरे का मादर पिदर आज़ाद ज़ेहनिय्यत की बिना पर जो ह़ाल हो रहा है और माद्दी तरक़्क़ियों और आसाइशों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के साथ साथ इन्सानिय्यत से ह़ैवानिय्यत की सम्त बढ़ने का जो सफ़र जारी व सारी है और अपने नुक़्त़ए उ़रूज को पहुंच चुका है, वोह भी मुला-ह़ज़ा हो बद क़िस्मती से ग्लोब्लाइज़ेशन

1 ......كتاب الكبائر، الكبيرة العاشرة، ص٥٥-٥٦.

www.dawateislami.net

के इस दौर में हमारी नौ जवान नस्ल भी अपनी शर्मो ह़या का ख़ुद गला घोंट रही है, न कोई समझने के लिये तय्यार होता है न कोई समझाने के लिये और रही सही कसर मग़रिबी न-ज़रिय्यात की लोरियों में परवान चढ़ने वाले वहां के बेहूदा कल्चर को मीडिया और दूसरे ज़राइए़ इब्लाग़ के तवस्सुत़ से मज़ीद फ़रोग़ दे कर पूरी कर रहे हैं, दीन से दूरी के बाइ़स न-ज़रिय्याती और अख़्लाक़ी त़ौर पर कमज़ोर व नह़ीफ़ मुसल्मानों की निगाहों में इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन, क़ुरआनी न-ज़रिय्यात और न-बवी ता'लीमात को फ़रसूदा क़रार दे कर इन के ज़ेह्नों में गुमराही के बीज तसल्सुल के साथ बो रहे हैं, बे ह़याई पर मुश्तमिल दिनों और तहवारों का रवाज भी इसी सिल्सिले की एक कड़ी और इन में से एक मश्हूर दिन जिस में नौ जवान लड़के लड़कियां मस्त हो कर खुल्लम खुल्ला अह़कामे शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ियां करते हैं **"वेलन्टाइन डे"** है।

मग़रिबी आज़ादी जिस की तक़्लीद में अ़क़्ल से पैदल हो कर बा'ज़ मुसल्मान भाग रहे हैं इस का नक़्शा और भयानक नताइज ज़िक्र कर देना ज़रूरी है ताकि ह़क़ीक़त निगाहों के सामने आए और अपने किये पर और जिन के पीछे लग कर येह ह़ाल हो रहा है उस पर अफ़्सोस व नदामत शायद किसी के दिल में पैदा हो जाए।

अ़ल्लामा बदरुल क़ादिरी मिस्बाह़ी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی जो त़वील अ़र्से से यूरोप के एक मुल्क में दीन की ख़िदमत के लिये मसरूफ़े कार हैं और वहां के ह़ालात से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ हैं अपनी किताब

www.dawateislami.net

"आदाबे ज़िन्दगी" में लिखते हैं :

आप जानते हैं तरक़्क़ी याफ़्ता दुन्या किसे कहते हैं ?

जहां शराब पीना फ़ेशन और उम्मुल ख़बाइस को बक़ाए सिह़्ह़त की ज़मानत समझा जाए।

क़िमार बाज़ी (जुवा खेलना) आ'ला सोसायटी का फ़र्द होने की सनद हो।

नाच, रक़्स, उछल-कूद, धमा चोकड़ी शोरो शर में हर नौ जवान लड़का और लड़की अज़ख़ुद रफ़्ता हो।

मज़हब, धर्म और रीलिजन जहां त़ाक़े निस्यां में रखी हुई फ़रसूदा किताब समझी जाए।

ता'लीम के नाम पर जहां स्कूलों और कॉलेजों में बे ह़याई और बद तमीज़ी का कोई अ़मल देखने से रह न जाए।

रात गए देर को लौटते हुए हर नौ जवान लड़का उस शब की मन पसन्द लड़की को भी बग़ल कर के लाने में आज़ाद हो।

या लड़की क्लब से लौटते हुए साथ आए अपने नौ जवान दोस्त का चहक चहक कर घर वालों से तआ़रुफ़ कराने में कोई बाक न मह़सूस करे।

जहां सिन्ने शुऊ़र को पहुंचने से पेशतर ही लड़के और लड़कियां जिन्सी इख़्तिलात़ के फ़ित़री और ग़ैर फ़ित़री त़रीक़े आज़मा चुकें।

जहां शादी बियाह, ख़ानदान, ह़म्ल और विलादत को फ़रसूदा त़रीक़ा और बिला वज्ह की ज़ह़मत समझा जाए।

www.dawateislami.net

जहां मर्द हर रात औ़रतें बदलते और औ़रत हर शब नया बॉय फ्रेन्ड मुन्तख़ब करने में आज़ाद हो।

इस्क़ाते ह़म्ल और औलादे ज़िना की परवरिश के जुम्ला इन्तिज़ामात हुकूमत अपना ज़िम्मा समझे।

जहां मर्दों को मर्दों के साथ और औ़रतों को औ़रतों के साथ हम-जिन्सी की आज़ादी ही नहीं बल्कि क़ानूनी तह़फ़्फ़ुज़ भी ह़ासिल हो।

जहां इन्सानी अख़्लाक़ का मे'यार इतना गिर जाए कि बूढ़े बूढ़ियां औलाद से ज़ियादा कुत्ते बिल्लियों को फ़रमां बरदार समझने लगें।

जहां ऐसे वाक़िआ़त आ़म हों कि मु-तअ़द्दद औलाद रखने के बा वुजूद मां या बाप तन्हा एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर जाए, जब लाश से तअ़फ़्फ़ुन उठे तो पड़ोसियों के ज़रीए़ औलाद को उस की मौत का इ़ल्म हो।

येह है तरक़्क़ी याफ़्ता दुन्या की आज़ादी और तरक़्क़ी का मुख़्तसर ख़ाका।(1)

ग़ौर कीजिये ! इस क़िस्म के आज़ाद मुआ़-शरे और इस में जनम लेनी वाली बुराइयों से मुस्लिम मुआ़-शरा क्यूं मह़रूम है इस फ़िक्र में मग़रिबी मुफ़क्किरीन और इस्लाम दुश्मन कुव्वतें हर लम्ह़ा मसरूफ़ रहती हैं और "**वेलन्टाइन डे**" जैसे दिनों के नाम पर अपनी इन ख़ुराफ़ात से मुस्लिम दुन्या को भी रू शनास कराना

1...... मुख़्-त-सरन अज़ : आदाबे ज़िन्दगी, स. 35।

www.dawateislami.net

चाहती हैं और जानती हैं कि मौजूदा ह़ालात में अक्सर मुसल्मान दीन से और दीनी ता'लीमात से दूर हैं और नफ़्सो शैत़ान के मक्रो फ़रेब में ब आसानी मुब्तला हो जाते हैं इस लिये एक दिन की ह़द तक ही सही जब हमारी त़रह़ जिद्दत व लज़्ज़त के नशे में मदहोश हो कर बे ह़याई व बे पर्दगी और वोह भी सरे आ़म करेंगे तो फिर इस लत से पीछा छुड़ाना इन के लिये मुश्किल हो जाएगा और आहिस्ता आहिस्ता येह बुराइयां इन के मुआ़-शरे में भी जड़ पकड़ लेंगी और दीमक की त़रह़ इसे चाटती रहेंगी चूंकि दीनी व रूह़ानी पाकीज़गी से रू शनास कराने वाले उ़-लमाए ह़क़ जो इन के मुआ़लिज भी हैं और रहबर भी इन से तो पहले ही क़ौम दूर है इस लिये इन का समझाने का इन पर असर तो कम ही होता है इन बे ह़याइयों के बाइ़स इन से मज़ीद दूर हो कर इन की ब-रकात से मज़ीद मह़रूम हो जाएगी फिर इस ला इ़लाज मरज़ का इ़लाज इन के बस में न रहेगा बद क़िस्मती से काफ़ी ह़द तक वोह अपने इस नापाक मन्सूबे में काम्याब दिखाई देते हैं।

शर्मो ह़या के पैकर, नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का कलिमा पढ़ने वाले मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखो ! ह़क़ीक़ी तरक़्क़ी इन यूरोपियन ख़ुराफ़ात में नहीं बल्कि इस्लामी ब-रकात में है।**

मग़रिबी मुआ़-शरे की मादर पिदर आज़ादी की येह झल्कियां इस लिये नक़्ल की हैं ताकि जो लोग येह कह कर समझाने वालों से जान छुड़ा लेते हैं कि "थोड़ा बहुत तो चलता है, तहवार ही तो है,

www.dawateislami.net

एक ही दिन की तो बात है, हम कौन से पाको साफ़ हैं'' इस त़रह़ के बेबाकी और ना इन्साफ़ी के साथ जुम्ले अदा करने वालों की आंखें खुलें और वोह सन्जी-दगी के साथ सोचने पर मजबूर हो जाएं कि दीन से मह़ब्बत और इस के अह़काम और मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिये हुए निज़ाम के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने से मह़ब्बत करने वाला त़बक़ा इन के भले की बात कर रहा है अगर वोह आज हंस हंस कर गुनाह करेंगे तो कल इन की औलाद या औलाद की औलाद इन मसाइब और गुनाहों की नुहूसत की बिना पर दुन्या में भी आफ़ात का शिकार होगी और आख़िरत की तबाही इस पर मज़ीद होगी ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप से इतनी गुज़ारिश आख़िर में ज़रूर करूंगा कि ग़ैर मुस्लिम तो हमारे नबिय्ये मुकर्रम व मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन के दर पै हों और आए दिन मुसल्मानों के दिलों को तौहीन आमेज़ ख़ाकों से छलनी करें और मुसल्मान जो येह ना'रा लगाते हैं कि सरकार के नाम पर जान भी कुरबान है और हर बे अदब की बे अ-दबी और शरारत पर सरापा एह़तिजाज होते हैं और ह़क़ीक़तन और ईमानन ऐसा होना भी चाहिये कि हमारी अ़क़ीदतों और मह़ब्बतों का मर्कज़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबा-रका है इन की मुबारक पुरनूर हस्ती से मुसल्मानों को जज़्बाती वाबस्तगी है और इन से वोह अपने मां बाप औलाद बल्कि अपनी जान से भी ज़ियादा मह़ब्बत करते हैं और इस का हुक्म ह़दीस शरीफ़ में मुसल्मानों को दिया भी गया है तो जान से बढ़ कर अ़ज़ीज़

www.dawateislami.net

हस्ती **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में अदना तौहीन बरदाश्त न कर सकना बिला शुबा उन के ईमान का तक़ाज़ा है मगर इस पहलू पर तो ग़ौर कीजिये कि आज के मुसल्मान बिल ख़ुसूस हमारे नौ जवान इन्हीं ग़ैर मुस्लिमों के ईजाद कर्दा गुनाहों से भरपूर रस्मो रवाज और दिनों, तहवारों के नापाक वारों का शिकार हो जाएं जैसा कि वेलन्टाइन डे और इस दिन होने वाले गुनाहों की मज़म्मत पर कुरआनो ह़दीस और अ़क़्ले सह़ीह़ की रोशनी में ऊपर काफ़ी तफ़्सील बयान की गई कि इस रोज़ बद निगाही बे पर्दगी ना जाइज़ तह़ाइफ़ का लैन दैन और शराबो कबाब, ज़िना व लिवात़त और इस के दवा-ई हर क़िस्म की बुराइयां आ़म होती हैं और मुसल्मान भी इस में मुब्तला होते जा रहे हैं। इस लिये ख़ुदारा होश करें कि शैत़ान के आलए-कारों के नक़्शे क़दम पर चलना जहन्नम की राह है लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला से डरते हुए उस के मह़बूब से शर्म करते हुए इस दिन और इस के इ़लावा ज़िन्दगी भर बे ह़याई बे पर्दगी फ़िस्क़ो फ़ुजूर से तौबा कर लीजिये और आयिन्दा शरीअ़त के अह़कामात की पाबन्दी सुथरी इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का पुख़्ता अ़ज़्म कर लीजिये।

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

كتبه

अबुल ह़सन फ़ुज़ैल रज़ा अल क़ादिरी अल अ़त्तारी عفا عنه البارى

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

قرآن مجید	کلامِ الٰہی	✿✿✿✿
نام کتاب	**مصنف/مؤلف**	**مطبوعہ**
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ،۱۴۳۲ھ
المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۱ھ
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
کتاب الکبائر	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	پشاور
بحر الرائق	علامہ زین الدین بن نجیم، متوفی ۹۷۰ھ	کوئٹہ ۱۴۲۰ھ
النور	خلیفہ اعلیٰ حضرت سید سلیمان اشرف، متوفی ۱۳۵۸ھ	ادارہ پاکستان شناسی، لاہور ۱۴۲۹ھ
بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ،۱۴۳۵ھ
آداب زندگی	علامہ بدر القادری مصباحی	برکاتی پبلشرز، باب المدینہ کراچی

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
बद अ़-मली के अस्बाब और फ़ित़री कमज़ोरियां	4	ना जाइज़ मह़ब्बत में दिये जाने वाले तह़ाइफ़ का हुक्म	27
वेलन्टाइन डे का पस मन्ज़र और इस दिन को मनाने का अन्दाज़	13	शराब नोशी की मज़म्मत से मु-तअ़ल्लिक़ आयाते कुरआनिया व अह़ादीसे मुबा-रका	27
शर्मो ह़या का दर्स और बे ह़याई की मज़म्मत आयाते कुरआनिया से	18	ज़िना व दवा-इये ज़िना की मज़म्मत में आयाते कुरआनिया व अह़ादीसे त़य्यिबा	29
शर्मो ह़या का दर्स और बे ह़याई की मज़म्मत अह़ादीसे मुबा-रका से	21	मादर पिदर आज़ादी की नुहूसत और बिगड़ती सूरते ह़ाल	32
गाने बाजे और मूसीक़ी की मज़म्मत कुरआनो ह़दीस की रोशनी में	24		

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net